इस्लाम और साइंस

मुसन्निफ़
जानशीने मोहसिने मिल्लत
मौलाना मौ॰ अली फ़ारूक़ी

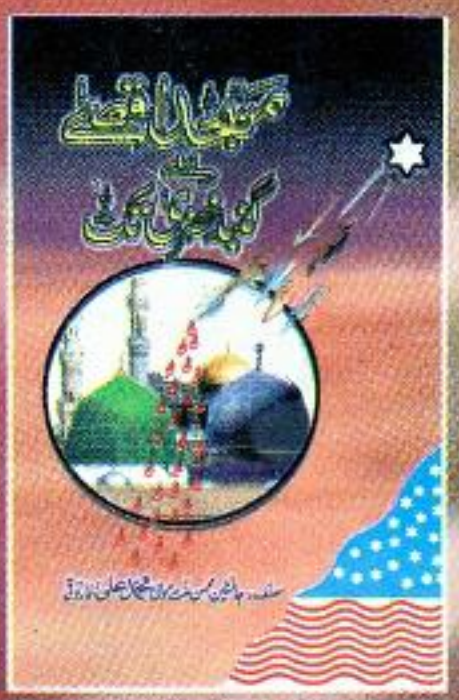

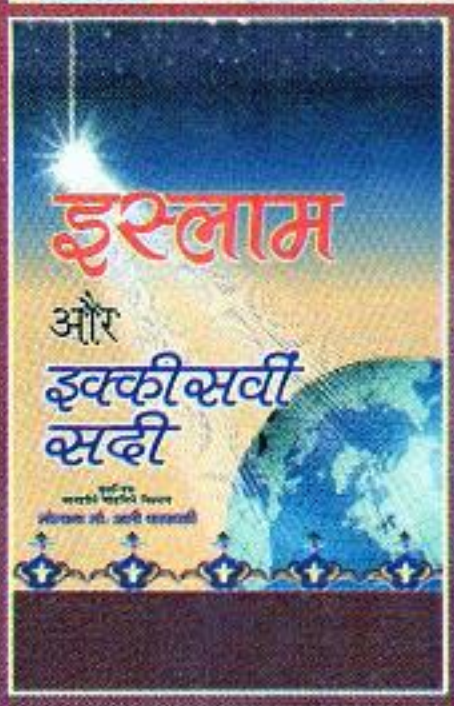

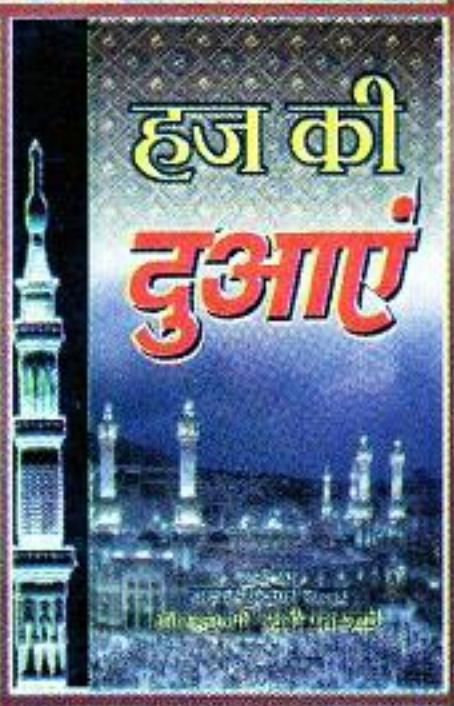

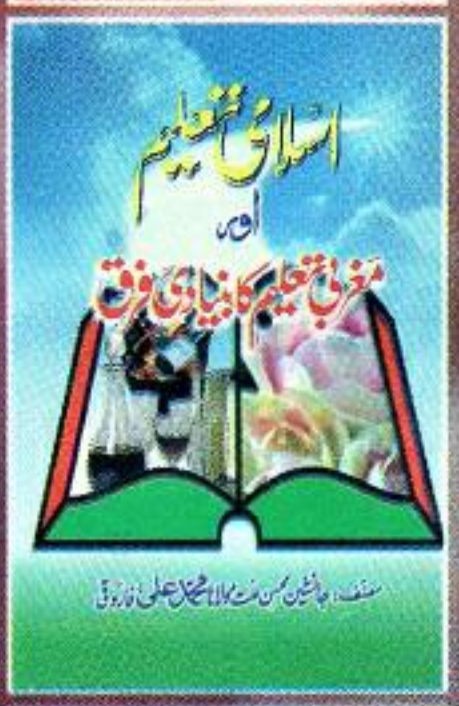

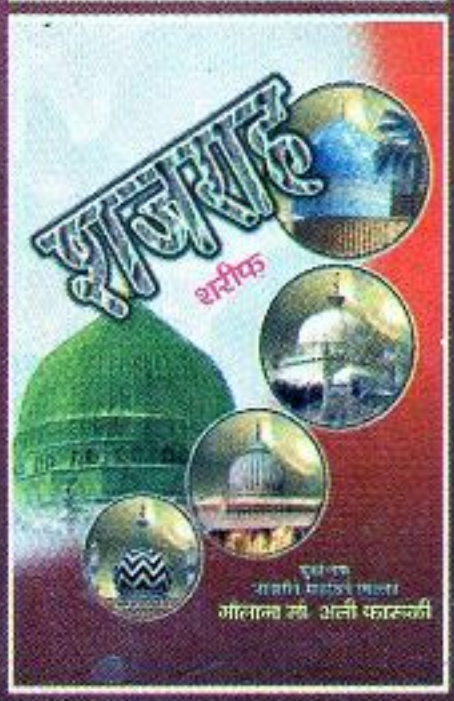

शायकरदा :

मोहसिने मिल्लत ऐकैडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन मुस्लिम यतीम खाना
रायपुर (छ० ग०)

इस्लाम और साइंस

३० नवम्बर और ११ दिसम्बर १९९९ को रवीशंकर युनिवर्सिटी में 'साइन्टिफिक टेम्पर इन रिलीजन' पर एक सेमीनार में पढ़ा गया मकाला की बुनियाद पर

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमिन व दारूल यतामा रायपुर

एक्स - अर्बिक लेकचरर आर.एस. युनिवर्सिटी, रायपुर

शायकरदा :- मोहसिने मिल्लत एकेडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमिन व दारूल यतामा रायपुर

पुस्तक का नाम

इस्लाम और साइंस

- : लेखक :-

जानशीने मोहसिने मिल्लत

मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी साहब

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (म.प्र.)

प्रूफ रीडिंग - मास्टर मोहम्मद शाकिर (आफिस इंचार्ज)

प्रकाशक - मोहसिने मिल्लत एकैडमी,
मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा
रायपुर (म.प्र.) 492 001.

प्रथम संस्करण - जनवरी 2001

कीमत - 10/- (दस रुपये)

प्रकाशन - ग़रीब नवाज़ प्रेस
मदरसा रोड, बैजनाथ पारा, रायपुर (म.प्र.)

-: आमुख :-

धर्म में वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर पं. रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी रायपुर ने एक राष्ट्रीय संगोष्ठी (सेमीनार) दिनांक ३० नवम्बर और १ दिसम्बर १९९९ में आयोजित किया जिसका आयोजन धर्म एवं दर्शनशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन शाला ने किया। जिस संगोष्ठी में यह आलेख पठन किया गया उसमें हिन्दुस्तान के कई विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के प्रोफेसर्स, डाक्टर्स और विद्वान उपस्थित थे। उपस्थित जनों ने इस आलेख को ध्यान से सुना, मनन किया और बहुत सराहना की। इस्लाम में 'साइंटिफिक टेम्पर (Scientific Temper) देखकर श्रोता आश्चर्य चकित रह गए।

उस वक्त अहसास हुआ कि आज के युग में भी कई बुद्धिजीवी और विद्वान ऐसे है कि जिनके सामने यदि इस्लाम की सही तस्वीर रखी जाए तो वे न मात्र चकित रह जाते हैं बल्कि उनका हृदय-महल इस्लाम की महानता-रूपी प्रकाश में आलोकित हो उठते हैं।

वह आलेख समयाभाव के कारण कुछ पृष्ठों तक ही सीमित था। किन्तु जब उसके प्रकाशन का समय आया तो दोस्तों ने कुछ विशेष तथ्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार इस आलेख ने एक पुस्तक का रूप ग्रहण कर लिया। अब वह आलेख सम्पूर्ण नया रूप धारण कर पुस्तकार में आपके सामने प्रस्तुत है, इस सम्बन्ध में मुझे कहां तक सफलता मिली है, यह आपकी दूर दृष्टि एवं सोच पर निर्भर है।

इस सम्बन्ध में जनाब मोहम्मद शाकिर सा. कार्यालय प्रमुख और जनाब उमर हयात साहब कोचिंग क्लास प्रमुख का भी शुक्रगुजार हूं जिन्होंने अपना कीमती वक्त देकर प्रूफ रीडिंग कर के इस पुस्तक को स्वस्त रूप से आप के समक्ष प्रस्तुत किया।

मोहसिने मिल्लत एकडमी मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यताना रायपुर अपने बानी खलीफ ए आला हज़रत, तलीए कामिल हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद हामिद अली साहब फारूकी के नाम की बर्कत लेकर आप के सामने इससे पहले भी कई किताबें पेश कर चुका है।

मध्य भारत का यह अज़ीम इदारा अपने बानी के दुआओं के सहारे आज भी यतीम वो गरीब बच्चों में तालीम की तरक्की के लिये लगा अपने देश की जबरदस्त खिदमत कर रहा है।

आज से पचहत्तर साल पहले हज़रत मोहसिने मिल्लत ने पूरे क्षेत्र का दौरा कर के अंग्रेजों के खिलाफ आज़ादी का चिराग़ जला कर छत्तीसगढ़ के इतिहास को एक नया रूप दिया था और उसी समय अनाथ बच्चों की शिक्षा को अपना लक्ष्य बना कर इस इदारे की स्थापना की थी। पब्लिक डूनेश और अवामी चन्दे को आधार बनाकर आपने जो चिराग़ जलाया और ज्ञान का जो दीप रौशन किया उस की रौशनी से पूरा इलाका जगमगा रहा है। आज यहां केवल अनाथ और गरीब बच्चों को शिक्षा ही नहीं दे रहा है बल्कि उनके भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये यहां टेक्नीकल इन्टीट्यूट और कम्पयूटर वगैरा का कोर्स भी चल रहा है। अब यह इदारा और यह संस्था अपने बानी के दुआओं और सरकारें गौस पाक और ग़रीब नवाज़ (रदेअल्लाहो तआला अनुहुमा) के फयूज़ वो बर्कात लिये कौम के तआउन और लोगों के सहयोग से तरक्की और उन्नति की तरफ बढ़ते हुए हमारे भविष्य को और भी उज्जवल बनाने में लगा आप की दुआ और आपका सहयोग चाह रहा है।

● **मोहम्मद अली फारूकी**
मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमान व
दारूल यतामा रायपुर (म.प्र.)
1-1-2001

इस्लाम और विज्ञान

विश्व प्रसिद्ध भौतिकवादि और नोबल प्राईज़ विजेता आइन्सटीन के अनुसार विज्ञान के बिना धर्म अपंग है और धर्म के बिना विज्ञान अंधी है।

Science without religion is lame religion without science is blind (Albert Einstein)

मनुष्य के जन्म से सम्बन्धित कुर्आनी थियोरी पढ़कर टोरांटो(केनेडा) युनिवर्सिटी के प्रोफेसर केथ. एल. मोर ने कहा था मुझे यकीन है कि कुर्आनी आयत और अहादीसे नबवी साइंस और मज़हब में पड़ी खलीज को दूर करने में मदद देंगे। (रोज़नामा जंग लाहौर 9.1.1985)

आज की शताब्दी को वैज्ञानिक युग कहा जाता है। जिसमें वो मज़हब जिसका रिश्ता सदा से इन्सानों से रहा है। उसे डार्क ऐज (Dark Age) की पैदावार कहा जाने लगा। जबकि वास्तव में यह सिर्फ एक गलत फहमी के सिवा और कुछ नहीं है। जिसका कारण सत्रहवीं और अट्ठारवीं शताब्दी का वह विशेष वातावरण था जिसने कुछ गलतियों की वजह से मज़हब और साइंस में टकराओं की कुछ ऐसी स्थिती पैदा कर दी जहां कुछ लोगों ने साइंस को सर्व श्रेष्ट मान कर धर्म और मज़हब को डार्क एज की पैदावार कहना शुरू कर दिया। जिस ने आगे चल कर विज्ञान को धर्म विरोधी रूप दे दिया। वरना एक सही और सच्चे मज़हब की साइंस न केवल तसदीक करती है। बल्कि अपने तौर पर वो उसकी मजबूती का जरिया भी बनती है। साथ ही साथ धर्म भी विज्ञान की उन्नति का मुख्य स्रोत बन कर उसे बढ़ावा देता है। मात्र बढ़ावा ही नहीं देता है बल्कि उसका रहनुमा (मार्ग दर्शक) बन कर अपने उसूलों और अपने सिद्धांतों के लिये उसे दलील और प्रमाण के रूप में इस्तेमाल भी करता है।

मज़हब पूरे संसार के बारे में अपना एक ठोस विचार रखता है। उस विचार के आधार पर वो एक मजबूत ठोस और चौतरफा काम का ऐसा प्रोग्राम भी रखता है जिसका मनुष्य जीवन से अटूट रिश्ता है। जब की साईंस या विज्ञान उस संसार के अध्ययन, रिसर्च एवं खोज से सम्बन्धित है जिसे हम जानते पहचानते भी है और जो हमारे देखने में भी आती है या कम से कम आ सकती है। इस तरह संसार में पाए जाने वाले तत्व के अध्ययन, उस की खोज और उन पर रिसर्च को हम साइंस या विज्ञान कह सकते हैं।

आज के इस विराट सेमीनार में देश के विभिन्न कालेजों युनिवर्सिटीयों के अलावा कई महान व्यक्तियाँ भी उपस्थित है। इस मौके पर जो विषय रखा गया वो है (: Scientific TEMPER IN RELIGION) साइंसी हक़ीकता मज़हब में। इस लिये में इस्लाम और विज्ञान पर रौशनी डालने की मैं कोशिश करूंगा।

आज हर जगह विज्ञान की बातें की जा रही है और आज के समय को वैज्ञानिक युग कहा जा रहा है। हकीकत तो यह है कि विज्ञान खुद अपने अन्दर एक ऐसा विराट अर्थ रखता है जिसका सम्बन्ध संसार में पाई जाने वाली सभी चीज़ों से किसी न किसी तरह जुड़ जाता है। इसी प्रकार धर्म का भी अपना एक अर्थ है जो धरती से लेकर आकाश तक हर जगह छाया हुआ है। खास तौर पर इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो जीवन के हर पग में, संसार के हर क्षेत्र, में विश्व के हर भाग में उसकी एक विशेष धारणा है और अपने सिद्धांतों के लिये, अपने दावों के लिये और अपने विचारों की पुष्टी के लिये उस ने धरती से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण ब्राम्हण्ड को एक प्रमाण के रूप में पेश किया है। इस लेहाज़ से कुर्आन में जो कुछ कहा गया पूरा संसार उसके दावों के लिये खुला हुआ प्रमाण बन जाता है। इस आधार पर विज्ञान इस्लाम के लिये एक ठोस प्रमाण के रूप में सामने आता है।

इस्लामी दृष्टि कोण से विज्ञान या साइंस की अहमियत का अन्दाज़ा इस से लगाईये कि खुदा ने सब से पहले जिस व्यक्ति को बनाया वो हज़रते आदम हैं। जिन्हें सम्पूर्ण विश्व पर ही नहीं बल्कि फ़रिश्तों पर भी अज़मत और बुज़ुर्गी से नवाज़ा गया। लेकिन यह सम्मान, यह महानता और 'यह बुलन्दी शक्ल वो सूरत की वजह से नहीं' या पहले आदमी होने की बुनियाद पर नहीं। बल्कि इल्म की बुनियाद पर थी जिसमें सारे संसार का ज्ञान था जिस के कारण उन्हें फरिश्ता जैसी नूरानी मख्लूक पर भी बुलन्दी और अज़मत दी गई। उन्हें जो ज्ञान दिया गया। उसे कुर्आन में 'अलअस्मा' कहा गया है। वो सिर्फ संसार का ही इल्म या ज्ञान नहीं था बल्कि सम्पूर्ण विश्व के साथ उस की विशेषताओं को और उसकी खसियतों को भी शामिल था जिसमें उस के दीनी फाएदे और दुनियावी अच्छाईयाँ भी शामिल हैं। आज संसार के उसी खोज और तलाश और उस पर रिसर्च को हम साइंसी दुनिया के नाम से जानते पहचानते हैं।

आज साइंस या विज्ञान का विषय हमारे सामने फैला हुआ यह पूरा संसार ही तो है जिस पर दिन रात रिसर्च कर के उसकी विशेषताओं से एक वैज्ञानिक हमें अवगत करता है। जैसे तबइय्यात (Physics) हयातियात (Bilogy)कीमियात (Chemistry) अर्दियात (Geology)और फलकियात (Astronomy) इत्यादि।जो साइंस का क्षेत्र है। आप को उसकी सारी खोज और उसका सारा रिसर्च इन्हीं के चारों तरफ घूमता दिखाई देगा।

इसी लिये वे उलूम या वो ज्ञान जिन्हें खुदा ने 'अलअस्मा' कह कर कुर्आन में बयान फरमाया। उस की सही हकीकत और उसकी गहराई को समझने के लिये साइंस एक मजबूत और ठोस ज़रिया है। बल्कि एक वैज्ञानिक जो खुदा पर ईमान रखता है वो जितना उसकी गहराई में जा सकता है और जितने अच्छे ढंग से उसे समझ सकता है वे आम लोगों के बस के बाहर है। दूसरे शब्दों में यूं कह लीजिये कि संसार पर विचार का उपदेश देकर इस्लाम ने साइंस को अपने लिये ज़रूरी और अनिवार्य चीज़ बना लिया। वो इस गर्वशाली संसार पर विचार को, दिन और रात के आने जाने को, जमीन और आसमान की बनावट को, उगते सूरज और डूबते चांद के खामोश पैगाम को खुदाई मारिफत और उसकी पहचान का ज़रिया करार देते हुए कुर्आन में बार बार कहता है ---- तुम (संसार पर) गौर वो फिक्र क्यू नहीं करते------ क्यू तुम (संसार पर) सोच विचार से काम नहीं लेते।

इस प्रकार कुर्आन हमें बार-बार संसार पर ध्यान ज्ञान और चिंतन के साथ उस पर रिसर्च और खोज की प्रेरणा देकरऐसे रास्ते पर ला खड़ा करता है जहाँ से विज्ञान नया जीवन पाने लगता है।

कुर्आन में अहले ईमान और मोमिन की एक शान यह भी बताई गई है। وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

"वो जमीन और आसमानों की बनावट पर सोंच विचार करतेहैं।
(सूरए आले इमरान आयत नं. 191)

एक वैज्ञानिक भी संसार की रचना पर विचार करता है और खुदा पर ईमान रखने वालों की भी यही शान बताई गई है मगर काबिले गौर बात यह है कि दोनों का काम एक जैसे लगने के बावजूद दोनों में बुनियादी फर्क भी है। एक वैज्ञानिक केवल रिसर्च और खोज को अपना सिद्धांत बना कर

संसार पर विचार करता है जब कि मोमिन उससे सीख भी लेता है और उससे इबरत भी पकड़ता है। इसी लिये एक साइन्टिस्ट सिर्फ ज्ञान की बढ़ोतरी पर संतुष्ट और पुर सुकून नज़र आता है। जब कि मोमिन का ईमान ज्ञान पाकर और ज्यादा चमकने लगता है। लेकिन जब कोई साइंटिस्ट ईमानी दौलत से भी माला माल हो कर संसार पर रिसर्च करेगा तो न केवल उसका हृदय खुदा की कुदरत से झूमने लगेगा बल्कि वो अपनी इस खोज से दूसरों को भी ईमानी चांदनी से प्रकाशित कर देगा क्योंकि काएनातऔर संसार पर विचार और चिन्तन खुदा से करीब करने का एक ऐसा सुन्दर और ठोस रास्ता है जिस पर जितनी कोशिश की जाए उतना ही खुदा की खुदाई औरउसके सर्व शासक होने का यकीन बढ़ता जाता है।

धर्म का विशेष केन्द्र बिन्दु हकीकत में तौहीद, रिसालत औरआखिरत है मगर इस सुन्दर संसार पर विचार 'अथाह समुन्द्र की गहराईयों में खोज' विशाल अंतरिक्ष और आज्ञात ब्राम्हाण्ड पर रिसर्च' उस पर चिन्तन और उस पर सोच विचार इस्लाम के बुनियादी अकादा और सिद्धांतिक मुल्य के लिये एक ऐसी खुली हुई पुस्तक है जिसे पढ़ कर मनुष्य का हृदय खुदा की मारिफ़त और उस की पहचान के मधुर प्रकाश से प्रकाशित होने लगता है जो जितना गहराई में जाता है उतना ही वो खुदा की महांता और उसके विचित्र शासन को अपनी खुली आंखों से देखने लगता है।

उदाहरण के रूप कुर्आने पाक में सूरए अम्बिया की आयत नं. 22 में कहा गया

लव काना फीहेमा आलेहतुन इल्लल्लाह लफस दता

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا

अनुवाद - : अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर तबाह हो जाते है (तर्जुम ए रज़विया) ऐसी स्थिती में सारे संसार की व्यवस्था ही बिगड़ जाती। आसमान और ज़मीन तक खत्म हो जाते।

यह एक सीधा और सच्चा प्रमाण पूरे संसार पर सोच विचार और चिंतन की कैसी ज़बरदस्त प्रेरणा दे रहा है। यह बताने की ज़रूरत नहीं।

जब हम आकाश पर नज़र दौड़ाते है तो लाखों करोड़ों और मिलयन ही

नहीं बल्कि असंख्य सितारों के झुरमुट में संपूण व्यवस्था और हैरत नाक शासन पाते हैं। जिसमें न कोई ट कराओ है और न ही कोई झगड़ा। जिसे देखकर हम चकित रह जाते हैं उस समय हम उस पर जितना ख्याल दौड़ाते हैं और जितना गहरा विचार करते हैं उतना ही हम हैरत में पड़ जाते हैं। उस समय ख़ुदा के सर्व शासक होने का यकीन हमारे हृदय में पवित्र संदेश लेकर उतरता है और साइंस की यह खोज हमें ख़ुदा से न सिर्फ और करीब कर जाती है? बल्कि इस संसार में पाए जाने वाले विचित्र शासन को देख कर और मनुष्य के जीवन पर पड़ने वाले उन के अज़ीम फायदों को पढ़ कर हर मनुष्य का हृदय ख़ुदाई अज़मतों का एलान करते हुए और उसकी महानता पर झूमते हुए पुकार उठ ता है

रब्बाना मा खलकता हाज़ा बातेला

सुब्हानका फकेना अज़ाबन्नार

ऐ हमारे पालने वाले तूने इसे बेकार पैदा नहीं किया। बस हमें जहन्नम की भयानक आग से बचा। (सूर आले इमरान आयन नं. 191)

कुर्आन में जहां मोमिन की यह पहचान बताई गई कि वो ज़मीन व आसमान की बनावट पर सोच विचार करते हैं।

वहीं ख़ुदा की मारिफत और उसकी पहचान हासिल करने वालों की विशेषता और खूबी यह भी बताई गई है कि-

इन्नमा यख शल्लाहों मिन एबेदेहिल उल्मा (सूरए...)

जिसे ख़ुदा की जितनी ज़्यादा पहचान होगी और जो ख़ुदा की "मारिफत" में जितना डू बा होगा उस का हृदय न केवल उसकी मोहब्बत और उसके ड र से भरा होगा बल्कि वो अपने काम में उतना ही ज्यादा जिम्मेदार नज़र भी आएगा। ऐसी हालात में उसका हर काम संसार की सुन्दरता को बढ़ावा और समाज के निर्माण में सहयोग ही देगा।

संसार में ख़ुदा का सबसे ज्यादा ड र और ख़ौफ रखने वाले ख़ुदा के मुकद्दस नबियों का गिरोह है। इसीलिए वो अपने काम में सबसे ज्यादा जिम्मेदार रहे हैं।

इस सिलसिले में ख़ुदा के आखरी पैगम्बर हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम) की मिसाल दूंगा. वैसे हमारा ईमान ख़ुदा के सारे पैगम्बरों पर है। हर नबी पर ईमान और उनका पूरा-पूरा सम्मान हर मुसलमान पर ज़रूरी है। मगर आपकी मिसाल देना और आप को ही उदाहरण के रूप में सामने लाना इसलिए ज़्यादा बेहतर है कि आपका पूरा जीवन आज भी किताब के वर्कों में

इतिहास के पन्नों में, हदीस की किताबों में इस तरह सुरक्षित है कि उनके जरिये आज भी हम आप की पवित्र जिवन आसानी से पढ़ भी सकते हैऔर समझ भी सकते हैं। अमरीकी इन्साइकिलों पेडि या के लेखक ने कितना सही और सच्चा लिखा है।

(Mohammad Was) Born Within the full light of history

(The Encylopedia Americana 1961 Vol.- 19 P. 292)

मोहम्मद तारीख के मुकम्मल रौशनी में पैदा हुए।इसलिए दूसरों के मुकाबले में उनकी बातों को जांचना और समझना हमारे लिये बड़ा आसान है। इस के साथ ही साथ एक कारण यह भी है कि उन्होंने इतना ही नहीं कहा कि मैं खुदा का रसूल हूं बल्कि आपने खुदा की तरफ से भेजे गए सारे नबीयों की तस्दीक करते हुए यह ऐलान भी फरमाया कि मैं उसी सुनहरे सिलसिले की आखरी कड़ी हूँ। मेरा दीन भी कोई नया दीन नहीं है। बल्कि हजरत आदम से हजरते ईसा तक सारे पैगम्बरों ने जिस खुदा की शहेंशाहिय्यत का तराना गया और जिस खुदा की शान वो शौकत से तुम्हें आगाह किया मैं भी उसी का पैगाम लेकर तुम्हारे पास आया हूँ। न मेरी दावत कोई नई दावत है। नहीं मेरा दीन कोई नया दीन है और न ही मैं कोई अकेला पैगम्बर हूँ बल्कि जो सिलसिला हजरते आदम से चला मैं उसी की आखरी कड़ी हूँ। यही वो कहीकत है जिसे कुर्आन में ''खातमुन्नबीयीन'' (आखरी पैगम्बर) कहा गया है।

आपने जिन संघर्षशील और आत्मघाती वातावरण में अपने संदेश को संसार के समक्ष रखा वो इतना घातक और खतरनाक था कि संसार का कोई भी व्यक्ति होता तो हिम्मत हार जाता और धीरज खो कर अपना मेशन समाप्त कर देता। मगर आपने जिस हिम्मत हौसला और बलिदान के साथ अपने मेशन को सफलता दी वो एक चमत्कार के साथ ईश्वरीय वरदान से कम नहीं है। एक अंग्रेज के शब्दों में

He Faced Adversity with the Deter mination to wring Success out of failur (E.E. Kellet)

आपने कठि न परिस्थितियों का मुकाबला ऐसी हिम्मत और ऐसे साहस से किया कि नाकामी से कामयाबी जन्म लेने लगी।

अमरीकी साईन्टि स्ट माईकल हार्ड ईसाई होने के बावजूद यह कहने

पर मजबूर हो गए।

He was the only man in history, who was supremely successful on the both the religious and secular levels.

(Dr. Micheal H. Hart, The 100, Newyork, 1978)

आप इतिहास में वो अकेले व्यक्ति हैं जो धर्म और राज्य के दोनों संसार में कामयाब रहे।

डा. माईकल हार्ड का यह भी कहना है कि

Mohammad on top of the hundred bests.

आप संसार के सबसे बड़े व्यक्ति थे। इसी तरह प्रसिद्ध अंग्रेज सर टामिस कार्लायल ने तो आपको नबियों का हीरो बताया है।

इसी तरह The Greatness of Mohammad के लेखक सर फिल्प गीज़ आप के चमत्कारी और गर्वशाली इतिहास को देखकर यह कहने पर मजबूर हो गए कि

मानव कल्चर और एखलाकी उन्नति को बढ़ावा देने में मनुष्य के जन्म से आज तक किसी भी व्यक्ति ने उतना काम नहीं किया जितना मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) ने किया।

बात चल रही है थी खुदा के खौफ के तअल्लुक से। इस सिलसिले में खुदा से जो जितना करीब होगा उतना ही उसका दिल खुदा के खौफ से भरा होगा। और उसका हृदय उसके भय से कांपता होगा।

हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम) के खौफे खुदा का यह आलम था कि जिन्दगी में कोई रात आप चैन से नहीं सोपाए। कुछ देर आराम करने के बाद उठ जाते और खुदा की इबादत में लग जाते। यहां तक कि कभी कभी तो रात रात भर इबादत में गुज़ार देते। पूरी जिन्दगी में खास कर "नबूवत" के एलान के बाद एक लम्हा भी आप का गफलत या ला परवाही में नहीं गुज़रा।

इमान की मज़बूती तो खुदाई मरिफत और उसकी पहचान पर ही है और यह सारा संसार तो उसी की पहचान का अन्मोल खज़ाना है जिस पर सोच विचार और चिंतन के लिये कुर्आन ने संसार वालों को बार-बार प्रोत्साहित किया।

जब हम संसार पर विचार करते हैं तो साइंस एक महान मार्गदर्शक बन कर उसके भेदों को हमारे सामने खोलती है. इसकेद्वारा अज्ञात ब्राह्मण्ड का 'अथाह समुन्द का और सुंदर एवं मधुर संसार का ऐसा स्वरूप सामने आता है जिसमें मनुष्य का हृदय बनाने वाले की महानता से गदगद हो जाता है।

'वो अपने अज़ीम' महान और कृपाशील ख़ुदा के इस उपकार पर झूमते हुए पुकार उठ ता है

अल्हमदो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। तमार प्रशंसा ख़ुदा के लिए है जो सारे संसार का रब (पालनकर्त्ता प्रभू, शासक) है

आज विज्ञान ने जिस संसार को जन्म दिया उसमें पदार्थ (Matteril) और उसकी शक्तियों (Energies) का एक नया रूप सामने आता है। पानी और बिजली पर रिसर्च करके विज्ञान ने घरों और शहरों से अंधेरों को दूर कर दिया। बड़े-बड़े उद्योगों के ज़रिये दुनिया का जुगराफिया बदल दिया।

पुराने समय का आदमी आकाश में चमकते सूरज मुस्कुराते चांद को देखता था। बिखरे सितारों की सुन्दरता में खो जाता था मगर उनके बारे में कुछ ज़्यादा कहने की स्थिति में भी नहीं था. इसी तरह ज़मीन पर पाए जाने वाले जानवरों और कीड़े मकोड़ों और साग-सब्जी तक ही उस की कुल जानकारी सीमित थी। वो उस समय आग, हवा, पानी और मिट्टी से आगे नहीं बढ़ पाया। जबकि आज का इन्सान एट म एलेक्ट्रॉन 'प्रोट्रॉन' न्यूट्रान, हाइड्रोजन, आक्सीजन, नाईट्रोजन, कार्बन, पोटेशियम, मैग्निशियम, रैडियम और योरोनियम जैसे लगभग 92 तत्वों को जानता है। आज वो धरती पर तकरीबन बारह लाख से भी अधिक जीव जंतु का पता लगाकर उसका अध्ययन कर रहा है। इससे भी आगे बढ़ कर दूरबीन द्वारा आकाश में हर दिन एक नई खोज का रिकार्ड बना रहा है। जिससे ख़ुदा के इस विराट सृष्टि और उसकी अत्यन्त आधुनिक रचनाओं का ऐसा-ऐसा सुन्दर रूप प्रकट हो रहा है कि उस पर आस्था और यकीन रखने वाले का दिल एक तरफ उसकी महानता और उसकी प्रतापवानता से लरज़ने लगता है तो वहीं दूसरी तरफ उसकी कृपाशीलता और उसकी दयावान्ता से उसका हृदय, मन को सुगंधित करने वाले फूलों की तरह महेकने लगता है। इस जगह विज्ञान कितने सुन्दर रूप में हमें अपने ख़ुदा से करीब करने का एक पवित्र साधन बन जाता है। इसीलिए कुर्आन पाक ने जहां जगह-जगह उसकी तरफ हमारे ध्यान को आकर्षित किया वहीं बार-बार संसार पर ध्यान ज्ञान के लिए हमें आमंत्रित भी किया।

الم تروا ان الله سخر لكم ما في السموت وما في الارض

अलम तरव अन्नल्लाहा सख्खरा लकुम माफिस्समावाते वलअर्दा

(सूरए लुकमान आयत नं. 20)

अनुवाद -: क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये काम में लगा दिये जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है।

خلق السموت بغير عمد ترونها والقى
في الارض رواسي ان تميد بكم وبث فيها من كل دابة
وانزلنا من السماء ماء فانبتنا فيها من كل زوج كريم ۝

खलकस्समावाते बेगैरे अमदिन तरौनहा व अल्का फिलअर्दे रवासिया अन तमीदा बे कुम व बस्सा फीहा मिन कुल्ले दाब्बतिन व अन्जल ना मिनस्समाए माअन फअन बत ना फीहा मिन कुल्लेजौजिन करीम

(सूरए लुकमान आयत नं. 10)

अनुवाद :- उसने आसमान बनाए बे ऐसे सतूनों के जो तुम्हें नज़र आऐं और ज़मीन में डाले लंगर कि तुम्हें लेकर न कांपे और उसमें हर किस्म के जानवर फैलाए और हमने आसमान से पानी उतारा तो ज़मीन में हर नफीस जोड़ा उगाया।

यहां आसमान की ऊंचाइयों पर, पहाड़ों के संतुलन पर, जीव-जंतु के जन्म पर काली घटाओं से बरस्ते पानी और धरती पर फैली हरयाली पर ध्यान, ज्ञान और चिंतन पर आमंत्रित करने के बाद किस शानों शोकत और कैसे प्रभावशाली और चुनौती देने वाले शब्दों में ऐलान किया जा रहा है।

هذا خلق الله فاروني ماذا خلق الذين من دونه

हाज़ा खल्कूल्लाह

फअरूनी माज़ा खलक़ल्लज़ी मिन दूनेही

अनुवाद :- यह तो अल्लाह का बनाया हुआ है मुझे वो दिखाओ जो उसके सिवा औरों ने बनाया (तर्जुम-ए-रजविया)

कुर्आन में इस प्रकार की कई आयतें हैं जो हर समय संसार की रचना पर 'उसकी बनावट पर' उसकी व्यवस्था पर' उसके निर्माण पर सोच विचार और ध्यान ज्ञान का ऐसा संदेश दे रही है। जिससे हर समय ज्ञान विज्ञान के नये-नये रास्ते खुल रहे हैं।

जिसके माध्यम से इस आधुनिक और सुन्दर संसार का नया-नया रूप हर समय हमें अपना एक विचित्र चमत्कार दिखा रहा है।

कुछ लोग इसे प्रकृति (Nature) से जोड़ कर धर्म को ही नकार देते हैं। इस सम्बन्ध में जोलीन हेकसेले (१८८७-१९७५) का वो कथन जो पत्रिका हिन्दुस्तान टाईम्स में प्रकाशित हुआ था उन विचारकों का बेहतरीन तुर्जुमान है।

जिस तरह एटम के टूटने से माद्दा (Matrial) के बारे में मनुष्य के पिछले तमाम ख्यालात मिट गए। इस प्रकार पिछली शताब्दी में ज्ञान ने जो उन्नति की वो वास्तव में ज्ञान वर्धक विस्फोट (Knowledge Explosion) है जिस से खुदा और धर्म से सम्बन्धी सारे विचार भक से उड़ गए।

(हिन्दुस्तान टाईम्स, संडे मेगज़ीन)

इस तरह का विचार रखने वालों ने संसार के कुछ ठोस सिद्धांतों को देख कर यह समझ लिया कि धरती से लेकर आकाश तक, सूर्य से लेकर आकाशगंगा तक, पानी से लेकर बादल तक, और आकाल से लेकर वर्षा तक सब की सब प्राकृतिक नियमों (Lows of Nature) पर आधारित है। और जब सब कुछ प्राकृतिक द्वारा ही हो रहा है तो उस पर और किसी शासक को मानने की क्या ज़रूरत है ? वह लोग न्यूटन को इस थियोरी (Theory) का हीरो बताते है। जिसने बताया कि सारा संसार एक ठोस सिद्धांत पर चल रहा है और हर चीज उसी पर आधारित है। जब प्राकृतिक नियम कुछ सिद्धांतों पर आधारित है तो फिर खुदा की अवश्कता कहां रही। ज़यादा से ज्यादा यह कहा जा सकता है कि अगर खुदा है तो उस ने प्रारम्भ में संसार की रचना की होगी।

मगर अब सारा संसार खुद ही अपने नियम अनुसार चल रहा है। इसलिये धर्म और खुदा की कोई जरूरत नहीं। महान विचारक वाल्टर के अनुसार खुदा ने संसार की रचना उसी प्रकार की जिस प्रकार घड़ी बनाने वाला (Watch Macker) घड़ी बनाता तो है मगर घड़ी बनाने के बाद वो स्वयं चलती रहती है।

अब यहां वाच मेकर की आवश्यकता खत्म हो जाती है। इसी प्रकार अगर खुदा था भी तो अब उसका संसार से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

अज्ञान काल में सूर्य उदय और चन्द्र ग्रहण का, वर्षा के बाद रंग बिरंग की सुशोभित होती घटाओं का सम्बन्ध खुदा, इश्वर्य, और गाड (God) से जोड़ा जाता था। मगर ज्ञान के प्रकाश ने और साईन्स की खोज ने सिद्ध कर दिया कि यह सब एक ठोस और जाने पहचाने सिद्धांतों पर आधारित है। इस लिये इस ज्ञानवर्धक विस्फोट (Knowledge Explosion) के बाद धर्म की आवश्यकता ही समाप्त हो गई। इस तरह की बातें करने के बाद हेकसेले कितने गर्व से कहता है।

If Events are due to Natural causes They
are not due to super Natural Causes

(Religion Without Revelation)

यदि यह घटनाएं प्राकृतिक सिद्धांतों पर आधारित है तो सृष्ठा द्वारा नियत कैसे हो सकते हैं।

कुर्आने पाक सूरए जासिया की आयत नं. २४ में ऐसे लोगों की वैचारिक व्याख्या और उनके सोच विचार को प्रस्तुत करते हुए बड़े ही सुंदर ढ़ंग से उनकी व्यावहारिक पूंजी को बेनकाब करते हुए कहता है।

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ
بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ (الجاثیہ آیت ۲۴)

यह लोग कहते हैं जो कुछ भी है बस हमारा यह सांसरिक जीवन है हम मरते और जीते हैं और हमको तो बस समय (काल) विनष्ट करता है। इन के पास इसका कोई ज्ञान नहीं। ये लोग केवल अटकलें दौड़ाते हैं।

मैं कहूंगा कि इस से किसे इन्कार है कि आज के ज्ञान और साईंस ने सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड के बारे में हमारी मालूमात को बहुत बढ़ा दिया। मगर हम यहां भूल जाते है कि संसार के बारे में हमारी जो भी जानकारी है वो सिर्फ एक वास्तविकता (FACT) तो है। लेकिन वह उस की व्याख्या (Explanation) नहीं हैं। बार-बार की कोशिशों के बावजूद हम आज तक यह भी नहीं जान सके कि यह प्राकृतिक सिद्धांत ने आखिर सिद्धांत का रूप कैसे लिया। क्या कारण है कि यह सारे विधान एक निर्धारित मार्ग पर ही चल रहे हैं और एक विशेष अंत ही की दिशा में बढ़

रहे हैं ।

जिस प्रकार रेशम के कीड़े शहतूत के पौधों द्वारा जीवन बिताते हैं । जहां पहले अण्डे से इल्लियां निकलती हैं जो शहतूत अरण्डी के पत्तों पर गुजारा करते हुए अपने मुख से एक प्रकार का चिपचिपा तरल पदार्थ निकाल कर खुद के चारों ओर लपेट लेती हैं जिसे कोकून और कहते हैं । जो आगे चल कर प्यूपा में बदल जाता है । फिर उसी प्यूपा द्वारा व्यस्क बनता है ।

यह उनका एक सीधा जीवन चक्र (life Cycle) है । आखिर क्या कारण है पहले अण्डा फिर इल्लियां फिर कोकून और फिर प्यूपा बनता है जो बाद में रेशम के कीड़े का रूप धारण कर लेता है ।

इसी प्रकार मनुष्य के शरीर में खून पाया जाता है जो हर समय उसे एक नया जीवन प्रदान करता रहता है ।

शरीर की लम्बी हड्डियों में और लीवर(LIVER) में पाया जाने वाला अस्थिमज्जा (Bone Marrow) में कैल्सियम एवं फास्फोरस के कारण वो जन्म लेता है । उसमें हिम्यो ग्लोबिन (Haemoglobin) होने के कारण खून लाल सूर्ख दिखाई देता है । यह इतना बारीक होता है कि एक इन्च में सात हजार से भी ज्यादा पाया जाता है । हिम (Hame)=लोहा (iron) और ग्लोबिन (Globin)=प्रोटीन (Proteins)=आयरन के कारण लाल और प्रोटीन के आधार पर वो हल्का सफेदी पीला रंग लिये होता है ।

हडिड्यों में पाए जाने वाले छेद(Poor) जो वेंस और आरटेरी (Veins & Artery) के लिये होता है । वेंस द्वारा हृदय के Right Artery में भर कर Tricuspid द्वारा राईट वेंट्रिकल(Right Ventricle) में भर जाता है । जो कार्बन डाईआक्साईड (Corbon Dioxyde) के कारण अशुद्ध होता है । इस लिये उसे साफ करने के लिये पलमोनरी वालवय (PuL Monary Valve) द्वारा फेफड़े में भेज कर आक्सीजन से शुद्ध और सूर्ख कर दिया जाता है । फिर परमोनरी वालवयू (Pul Monary Valve) द्वारा लेफ्ट आरटरी और लेफ्ट वेन्टरीकल(Left Artery & Lift Ventricle) में बाई कस्पिड़ वालवयू (Bicuspid Valve) द्वारा पहुंच कर एरोटिक वेल्यू (Aerotic Valve) से होता हुआ पूरे शरीर को हर दम एक नया जीवन प्रदान करने लगता है ।

यहीं पहुंच कर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या कारण है कि हड्डीयों से लेकर लीवर हृदय से होता हुआ फेफड़े तक सभी एक दूसरे से सम्पर्क साध

कर एक ही रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसा क्यूं नहीं होता कि हिम्योग्लबिन का काम पलाज्मा करें और पलाज्मा का काम हिम्योग्लूबिन करने लग जाए। हृदय में खून साफ न होकर फेफड़े में साफ होने लगे। और फेफड़े में लाल सूर्ख न बन कर हृदय में यह काम होने लगे। एक विज्ञानिक जिसका उत्तर यह देता है कि यह एक ऐसा कानून और ऐसा सिद्धांत है जिसे अन्धीअनुकरण कहा जाता है।

(Blind Interplay of Physical And Chemical Forces) भौतिक एवम् रसायनिक शक्तियों का अन्धा अनुकरण। मगर इस का क्या कारण है कि यह अंधी ताकतें सदा एक ही रास्ते पर चल कर एक ही ऐसे विशेष अन्जाम तक पहुंचती हैं। जहां पहुंच कर बादल बरसने लगते हैं। फूल खिलने लगते हैं। फल पकने लगते हैं।

एक ही रास्ते पर चल कर और एक ही विशेष अन्त तक पहुंच कर मनुष्य का विशेष रूप दिखाई देने लगता है। एक छोटा सा बीज पौधा, फिर फूल बन कर महेकने लगता है! एक सितारा उसी प्राकृतिक सिद्धांतों का पालन करते हुए चमकने लगता है। आखिर भौतिक एवम रसायनिक इत्यादि शक्तियों का वो कौन सा अन्धा अनुकरण है जो उन्हें एक मखसूस अन्जाम तक ही पहुंचाता है। यहां एक वैज्ञानिक और एक साईन्टिस्ट चुप्पी साध लेता है वो यह तो बताता है कि जो कुछ हो रहा है वो क्या है। मगर ऐसा क्यूं हो रहा है यहां Knowledge Explosion और ज्ञान के प्रकाश का सारा चमत्कारी रूप छुप जाता है। एक विद्वान के अनुसार

Nature is a fact, not an Explanation

प्राकृतिक सिद्धांत संसार का एक सत्य तो है मगर वो उस का कारण नहीं है। एक विचारक ने कितनी सही और सच्ची बात कही है कि

Nature does not explain, she is her self in need of an explanation.

प्रकृति संसार की व्याख्या कैसे कर सकती है जब कि वो स्वयं व्याख्या चाहती है।

इस प्रकार ज्ञान के जिस प्रकाश को धर्म विरोधीयों ने प्राकृतिक नियम और Law of Nature बता कर उसे Blind Forces या अन्धा अनुकरण कहा वो वास्तव में अन्धा अनुकरण नहीं है बल्कि कुदरत का अपना रास्ता (God Working Route) है।

जिस इल्मी धमाका और ज्ञानवर्धक विस्फोट (Knowledge Explosion) से धर्म की समाप्ती की घोषणा की गई । उसी प्राकृती की कार्य शैली ने धर्म को नव जीवन प्रदान कर उसे पहले से ज्यादा शक्तीशाली बना दिया और कुदरत के अपने बनाए हुए रास्ते को पहले से अधिक प्रकाश में लाकर हमें उससे और करीब कर दिया । जान वेलसन (John Villsion) के शब्दों में It is Still God working Through these things इन प्राकृतिक व्यवहारों के पीछे अल्लाह की ही कुदरत काम कर रही है ।

कुर्रानें पाक में 6666 आयतें हैं जिसमें एहकाम (जीवन व्यवस्था) के तअल्लुक से पांच सौ आयतें हैं (अल इतकान फी उलू मिल कुर्आन) मगर निज़ामें कायनात (ईश्वर निर्मित प्राकृतिक व्यवस्था) और नये शब्द में साइन्स और टे क्नालाजी पर तकरीबन सात सौ आयतें हैं (अल कुर्रान वल उलूमिल असरिया) इस्लाम ने जिस तरह साईंस और टे क्नोलाजी को बढ़ावा दिया और जिस प्रकार इसके लिए जज़बात को परवान चढ़ाया। उसके हसीन खूबसूरत और क्रांतिकारी पहलू को देखना हो तो इतिहास का पन्ना पलटिए। जहां कदम-कदम पर साईंस और टे क्नालाजी की रोशनी जगमगाती नज़र आएगी। जगह-जगह नये इजादात और आविष्कार का सिलसिला दिखाई देगा। हर हर पन्ने पर तहकीक वो तलाश की एक नई दुनिया हमारा स्वागत करती नज़र आएगी।

हर हर सफें पर साईंस टे क्नालाजी और नये-नये निर्माण और उन्नती की तफ्सीलात के मधुर प्रकाश से दिलों का आकाश जगमगाता नज़र आएगा। पग-पग पर उसके मनमोहक सुगंध से पूरा समाज सुगंधित और जगह-जगह उसके मधुर प्रकाश से खोज और तलाश का सारा संसार प्रकाशित दिखाई देगा। जिससे न केवल एक नया क्रांतिकारी संसार के निर्माण का सुंदर सपना साकार हुआ बल्कि जिसे पढ़कर मानवता का सिर भी गर्व से गर्वांचिंत होने लगता है और इन्सानियत का सीना भी खुशियों से धड़कने लगता है। साथ ही साथ हर मनुष्य के हृदय में अमन वो शांती, प्रेम वो मोहब्बत, कुर्बानी और बलिदान की ज्वालामुखी भी भड़कने लगती है।

बगदाद का मशहूर खलीफा हारून रशीद ने शाहे फ्रांस शारलीमान के पास एक घड़ी तोहफे में भेजी जो पानी से चलती थी और हर घंटा उसमें घोड़ों का एक दस्ता निकलकर अजीब व गरीब मंजर और आश्चर्यजनक करतब पेश करता था। अब्बासी खलीफ अलमामून (786-833) जिसका नाम

आज भी इल्मी दुनिया में छाया हुआ है। उसने "बैतुल हिकमत" (साईंस एकेडमी) की स्थापना कर के अबू अब्बास अहमद बिन मोहम्मद कसीर अल फरगानी के ज़रिये जमीन का घेरा (Circum Ference) मालूम करवाया जो 25009 मीला निकला, उस वक्त उसके पास सिवाए कुछ छोटे-मोटे आलात के अलावा जैसे एक छोटा सा आला (Quadrant) उस्तुरताब (Telescope) घुप घड़ी और मामूली ग्लोब के सिवा कुछ नहीं था मगर हैरत अंगेज तौर पार आज नई साईंस में हर तरह की सहूलियत की मौजूदगी के बावजूद वहां सिर्फ 151 मील का फर्क निकला यानी 24858 मील। दूसरे शब्दों में चालीस हजार किलो मीटर में सिर्फ 151 मील का फर्क।

मोहम्मद इदरीस ने 1153 ईस्वी में "नुजहतुल मुश्ताक फी एहतेराकिल आफाक के नाम से भूगोल की प्रसिद्ध किताब लिखी और नारमन बादशाह की फरमाईश पर 40 किलो चांदी का ग्लोब बनाया जो शायद दुनिया का पहला ग्लोब था।

कुर्रान साईंस की कोई किताब तो नहीं है उसका असल उद्देश्य तौहीद, रिसालत, और आखिरत है। मगर उसने जगह जगह अपने मुद्दआ और अपने उद्देश्य को दिलों में उतारने के लिये जिस तरह साईंस का इस्तेमाल किया वो हैरत अंगेज तौर पर आज के समय में चौका देन वाला है, जैसे अकीद ए तौहीद से दिलो को मनुव्वर करने के लिये और इन्सानी जहन वो फिक्र को अपने दावे पर मुतमईन करने के लिये उसने इन्सान की इब्तेदाई हालात का जिस दिलकश और हैरत अंगेज अन्दाज़ में नक्श पेश किया उसे सुन कर बड़े से बड़ा मुफक्किर और अज़ीम साईंसदॉ भी तअज्जुब में पड़ जाता है।

कुर्आने पाक ने कई जगह इन्सानी पैदाईश को अपने मखसूस अन्दाज में बयान किया है। एक बच्चा किस अन्दाज में जिन्दगी पाता है इस सिलसिले में सुरए अल मोमेनून की आयत नं. 12 से 14 को मैं पेश करूंगा जिसमें बड़ी वजाहत और तफसील के साथ इन्सानी तखलीक पर रौशनी ड़ाली गई है। कुर्आन के शब्द यह है ?

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ۝
ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً
فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ
لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝

वला कद खलकनल इन्साना मिन सोलालतिन मिन तीन। सुमा जअलनाहो। नुतफतन फी करारीन मकीन। सुम्मा खलकनन नुतफता अल कतन फखलक नल अलकता मुतगतन फखलकनल मुतगता एजामन फ कसौलन ए जामा लहमन सुम्मा अन्शानहा खलकन आखर

अनुवाद -: और बेशक हमने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया। फिर उसे पानी की बूंद किया एक मजबूत ठ हराव में।फिर हमने उस पानी की बूंद को खुन की फिट क (लोथड़ा) किया। फिर खुन की फीट क को गोश्त की बोटी।फिर गोश्त की बोटी को हड्डि या फिर उन हड्डि यों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सुरत में उठ ानदी । रब्बे काएनात इन्सानी पैदाइश और उसके जन्म पर तफसीली रौशनी ड ालने के बाद किस शान वो शोकत और किस जाह वो जलाल के साथ एलान फरमा रहा है।

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ ۝

तबार कल्लाहो अहसनुल खालेकीन। जिसका अनुवाद बीसवीं सदी के सबसे मशहूर हस्ती मुजद्दिदे आज़म फाजले बरेलवी इस तरह फरमाते है । तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह। सबसे बेहतर बनाने वाला

इसी तरह दुसरी जगह सुरए अलजुमर की आयत 6 में जिस साईटि फिक तरीके पर माँ के पेट में बच्चे की हिफाजत पर रौशनी ड़ाली गई है साइंसी दुनिया के लिए चैलेंज बन कर वो आयत :वफी अनफोसेकुम अफलातुब से रून -----(तुन अपने नफ्स (शरीर) में क्यूं नहीं देखते) की जीति जागती मिसाल बन गई। जिससे न सिर्फ (संसार के महान विचारकों की अकलें हैरान है। बल्की साईंस दुनिया में भी इस क्रांती कारी ज्ञान से एक नया इतिहास रच रहा है।

يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ
بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ

यखलोको कुम फी बुतुने उम्माहाते कुम खलकन मीन बादे खलकिन फी जोलो मातीन सलासीन।

अनुवाद :- तुम्हे तुम्हारी माँ के पेट में बनाता है एक तरह के बाद और

तरह,तीन अन्धोरियों में (तर्जुमए रजवीया)

17 वीं शताब्दी के आखिर में (Microscop) का आविष्कार हुआ और 18 शताब्दी के शुरू में इन्सानी पैदाइश के तअल्लूक से जो थ्योरी सामने आई उसने टोरंटोर(केनेड़ा) युनिवर्सिटी के फ्रोफेसर डा. केथ, एल मोर को चकित कर दिया इन्सान का माँ के पेट में कैसे जन्म होता है और पुरा शरीर बने तक वो किन किन स्टेज से गुजरता है उस पर आज की साईंस ने जो रौशनी डाली उसका अध्ययन करने के बाद जब कुर्आनी साईंस का अध्ययन किया जाता है तो संसार चकित रह जाता है। कि सादियों पहले कुर्आन ने जिसे बयान किया था और जिसका माइक्रो स्कोप(Microscop) के पहले देखना असम्भव था। उसे कुर्आन ने किस तरह आज के वैज्ञानिक युग से पहले बता कर विज्ञान के एक नये संसार को जन्म दिया। डॉ. केथ. एल. मोर के साथ टेस्ट ट्यूब बेबी की निरक्षण करने वाले डॉ. राबर्ड एडवर्डज़ भी थे। कुर्आनी विज्ञान को अपनी खुली आंखों से देखकर डॉ. केथ.एल. मोर. ने जो लेख लिखा उसका उर्दू अनुवाद पाकिस्तान के मशहूर पादरी एमोनूइल लौथर राईक के कलम से जुमा मेग्ज़ीन और रोज़नामा जंग लाहौर (6 से 12 सितम्बर 1985) में छप चुका है।

उस में उन्होने बड़ी तफसील से बताया कि किस तरह 17 वीं शताब्दी में खुर्द बीन (Microscop) के आविष्कार के बाद मुर्गी के बच्चों को देखकर पैदाईश के प्रारम्भिक हालात का निरक्षण किया गया मगर फिर भी 1940 तक इन्सानी जनीन (HUMANGENES) के बारे में कुछ कहना मुशकिल था। और उसके बाद भी जनीन (Genes) के बारे में जो कुछ कहा जा रहा है। चन्द सालों पहले विश्व स्थर पर उसकों मनवाना भी बड़ा मुशकिल था मगर इस्लाम का साईंसीकमाल देखिये कि उसने सदियों पहले उसे बता कर अपनी सच्चाई का जिन्दा प्रमाण हमारे सामने रखा दिया।

अब अंदाजा लगाईये कि कुछ साल पहले जिसका समझना बेहद मुशकिल था और विश्व स्थर पर जिसको मनवाना बड़ा कठिन था। उसे इस्लाम ने कुर्आन द्वारा सदियों पहले बता कर एक नये युग का निर्माण किया जो आगे चलकर साईंसी दौर या विज्ञान युग से प्रसिद्ध हुआ। इसी लिए डॉ. मोर ने कुर्आनी तफसील पढ़कर दुनिया को यह संदेश दिया कि उन्हें यकीन है कि कुर्आनी आयात और अहादीसे नबवी (सल्लल्लाहो अला हबीबेही) साईंस और मजहब के बीच पड़ी खाड़ी को दुर करने में मदद देंगी।

सत्तरवी और अट्ठारवीं शताब्दी में सांस्कृतिक धरोहर और पुरातत्वों (Archaeology) की उन्नती और उसके विकास ने इतिहास के धारे को नयी दिशा की तरफ मोड़ दिया। मोहन जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई और उस पर रिसर्च उसी का परिणाम है। इन प्राचीन वस्तुओं के अध्ययन (Archaeology) से पिछले इतिहास का और उस समय बसने वाली कौमों के हालात मालूम होते हैं। कुर्आन ने सदियों पहले उस [illegible] पर भी विशेष रूप से न केवल प्रकाश डाला बल्कि उसे ज्ञान वृद्धि देकर हमें उस समय के कल्चर और उनकी सभ्यता से अवगत कराते हुए उन से सीख लेने का हौसला भी दिया। जिसे हम कुर्आनी आरकेऔलौजी (Archaeology of Quran) कह सकते हैं। जो कुर्आन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific temper in Quran) की। बल्कि यूं कहिये कि कुर्आनी टेम्पर इन साइन्स (Qurani Temper in Science) की मुंह बोलती तस्वीर है।

इस सम्बन्ध में मिश्री सम्राट फिरऔन के तअल्लुक से सूरए यूनुस की आयत नं. ९२ पर प्रकाश डाला कर गुजर जाऊंगा। जिसमें उस से सम्बन्धित एक भविष्यवाणी है। मिश्र के उन्नीसवें राज्य घराने से सम्बन्धित फिरऔन 'रामीसस द्वितीय' जिस का शासन काल तेरहवीं शताब्दी ईसा पूर्व (१३०४-१२३७) था। जो न केवल खुदा के मुकद्दस पैगम्बर हजरत मुसा (अलैहिस्सलाम) के समय का था। बल्कि अपने आप को सब से बडा खुदा भी समझता था। मिश्र के मंदिर अबू सम्बल में अंकित उस का यह कथम आज भी संसार वालों को एक गम्भीर सीख दे रहा है। जिसमें उस का खुद का बनाया हुआ देवता उससे कहता है।

> मैं तेरा पिता हूं। मैंने तुझे एक देवता समान जन्म दिया। ताकि तू मेरे स्थान पर राज्य करे। ..... मैंने तुझे अमृत सम्राट बनाया। एक ऐसे राजकुमार की तरह जो सदा जीवित रहेगा।
>
> (Record of the Vol. XII, P. 84-91. J.D. & Schmidt : Ramess esll 168)

मगर अपने आप को अमर, अजर, अनंत, और बेअन्त के सपने में खो कर खुदाई का दावा करने वाला सम्राट नदी के एक धारे की मार भी

कर खुदाई का दावा करने वाला सम्राट नदी के एक धारे की मार भी न सह सका और एक पल में अनन्त से अन्त और अमृत से मृत के अंधकार में सदा के लिए खो गया ।

कुर्आने पाक में सूरए यूनुस की आयत नं. ९२ में स्पष्ट शब्दों में कहा गया ।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً (سورة يونس ۹۲)

आज हम तेरी लाश को बचा लेंगे ताकि
तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो ।

इस आयत में कुर्आने पाक ने खुले शब्दों में घोषणा करते हुए भविष्यवाणी की कि उस के शरीर को चमत्कारी रूप से सुरक्षित रखा जाएगा ताकि आने वाली नस्लें न केवल उससे गम्भीर सीख हासिल करें बल्कि आर्किऔलौजी (Archaeology) के विकास में एक नए क्रांती की स्थापना भी हो । इस प्रकार संसार के महान वैज्ञानिकों ने सतरवीं और अट्ठारवीं शताब्दी में जिस संसार में कदम रखा । कुर्आन ने उस की स्थापना सदियों पहले कर के संसार के महान वैज्ञानिकों को चकित कर दिया । यह बात अब स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो चुकी है कि मिश्र में फिरऔन की लाश और उस का शव वही है जिसके सुरक्षित होने की भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय की थी जब संसार वाले उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे ।

फ्रांसीसी स्कालर लोरेट (LORET) ने १८९८ में न केवल उस शव का निरीक्षण किया बल्कि उसे 'एहरामे मिश्र' से निकाल कर 'काहेरा' के मियूजिम 'दारूल आसार' में रखवाया । फिर प्रोफेसर ग्राफ्टन ऐलेट स्मिथ(Elliot Smith) ने ८ जुलाई १९०७ को उस का निरीक्षण करके अपनी वो प्रसिद्ध पुस्तक लिखी जिसका नाम है "THE ROYAL MUMMIES" । इस सम्बन्ध में फ्रांसीसी स्कालर डाक्टर मोरेस बुकाई(Dr. Maurice Bucaille) ने भी जून १९७५ को फिरऔनी शव का निरीक्षण करने के बाद जब उस के इतिहास का अध्ययन (study) करते हुए कुर्आनी भविष्यवाणी पर विचार किया तो यह कहने पर मजबूर हो गया

Those who seek among modern date for proof of the veracity of the holy scriptures will find a magnificent illustration of the Vearses of the Quran dealing with the pharoah's body by Visiting the royal Mummies room of the egyptian museum, Cairo

(The Bible, The Quran and Science - 1976 P. 241)

जो लोग पवित्र पुस्तक (कुर्आन) की सच्चाई के लिये साइन्सी प्रमाण चाहते हैं। उन्हें चाहिए कि वो काहेरा के मिश्री म्यूजियम में उन शाही ममियों (पार्थिव शरीर) के कमरे को देखें। उन्हें वहां फिरऔन के शरीर से सम्बन्धित कुर्आनी आयतों का अत्यन्त शानदार प्रमाण दिखाई देगा।

इस तरह प्रोफेसर लोरेट, डा. एलेट स्मिथ और डा. मोरेस बुकाई से लेकर प्रोफेसर केथ एल मोर तक सब का एक ही जबान और एक ही वाणी में यह एलान की कुर्आन साईन्स और धर्म के बीच पड़ी खाई को दूर कर देगा। यह इस बात का खुला एलान और स्वीकार योग्य घोषणा है कि कुर्आन ने साइन्टिफिक टेम्पर और विज्ञान को विकसित ही नहीं किया और उसे मात्र उन्नति ही प्रदान नहीं कि बल्कि हमें एक नया साइन्सी वर्ल्ड और टेक्नालाजी युग भी दिया और आज के इस आधूनिक संसार का निर्माण भी किया।

यह भी अजीब संयोग है कि मिश्र पर मुस्लमानों ने फारूकेआजम हज़रत उमर (रदेअल्लाहो तआला अन्हो) के शासन काल में विजय प्राप्त की, मगर उस वक्त दरियाए नील को जिन्दा करने का विश्व प्रसिद्ध घटना तो मिलती है। मगर एहरामे मिश्र (Pyrmmid) की तरफ उनकी कोई भी खास तवज्जह नहीं हुई। जब कि फिरऔन के सम्बन्ध में कुर्आन में एक से अनेक स्थानों पर चर्चा पाई जाती है। मगर अट्ठारवीं शताब्दी में फिरऔन के शव के आंखों देखे प्रमाण ने एक नए इतिहास को जन्म दिया। यह कुर्आन के ईश्वरीय रक्षा का प्रमाण ऐसे समय संसार के समक्ष आया जब जोलिन हेक्सले (१८८७-१९७५) धर्म का मखौल उड़ा रहा था। न्यूटन की थियौरी साइन्सी दुनिया में क्रांती ला रही थी। आईन स्टाईन (1879-1955) के सिद्धांत वैज्ञानिक संसार में नये विचार की स्थापना कर रहे थे। डार्विन (1809-1882) धर्म को नष्ट करने के लिए इंसान

का संबंध बंदरों से जोड़ रहा था। कार्ल मार्क्स (1818-1883) खुदा को चुनौती देते हुए समाज को खुद का कानून दे रहा था। इस प्रकार यह विद्वान और यह विचारक नास्तिकता के मृत शव में नया जीवन डालने की असफल कोशिश कर रहे थे। इग्लैंड फ्रांस और अमरीका इस्लाम को विश्व स्तर का खतरा बता कर उसे मिटाने के लिये पूरी ताकत लगा रहे थे। ऐन ऐसे मौके पर खुदाई चमत्कार एक नए ढंग से सामने आता है और फिर संसार ने देखा कि जिस योरोप ने धर्म को नष्ट करना चाहा और धर्म की सत्यता का प्रतीक इस्लाम को मिटाने का प्रोग्राम बनाया। जिन विचारकों ने इस्लाम को आज के वैज्ञानिक युग में रूडी वादी और अंधविश्वास का प्रतीक मानकर आऊट आफ डेट (Out of Date) की पदवी दी। जिन राईटरों ने ज्ञानी संसार में उसे अपंग करना चाहा। उन्हीं विद्वानों के माध्यम से कुछ ऐसे भी व्यक्तियों का जन्म हुआ जिन्होंने कुर्आन की भविष्यवाणी पर विचार किया। उस के द्वारा कही गई बातों पर गौर किया। उस की आयतों (श्लोक) पर रिसर्च किया और फिर कुदरत ने उन्हीं के हाथों उस की सच्चाई, उस की महान्ता और उसके खुदाई किताब होने का ऐसा वैज्ञानिक प्रमाण संसार वालों के समक्ष रखवाया कि एक तरफ सारा संसार आश्चर्य और चकित रह गया। दूसरी तरफ वैज्ञान भी उसकी चौखट पर श्रद्धांजलि अर्पित कर के गर्वांचित होने लगा। यही नहीं बल्की ईश्वर पर आस्था न रखने वाले का हृदय भी उसकी आकाश गंगा से प्रकाशित होने लगा। जिस के कारण गुलशन में खिले हुए गुलाब की मधुर सुगंध की तरह उसकी मन मोहक सुगंध से विज्ञान शाला, रिसर्च सेंटर और अनेक यूनिवर्सिटीज भी सुगंधित होकर जबाने हाल से पुकार उठीं कि यह वो महान पुस्तक है जो ज्ञान-विज्ञान के हर युग में, साइन्स और टेक्नालोजी के हर शासन में उन्नति और विकास के हर संसार में मात्र अपनी सत्यता ही मनवाती नहीं रहेगी बल्कि साइन्सी तरक्की और तहज़ीबी उरूज के हर युग को और हर शताब्दी को अपने मधुर प्रकाश से प्रकाशित करके रिसर्च और खोज के संसार में हर समय एक नया और आधूनिक इतिहास भी रचती रहेगी।

आज कम्प्यूटर का समय है। इक्कीसवी शताब्दी में कम्प्यूटर का राज्य होगा। हर जगह कम्प्यूटर का शासन चलेगा मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि बीसवीं सदी के आखिर और इक्कीसवीं सदी के शुरू में जो युग जन्म लेने वाला था वो कुर्आने अंजीम में बड़े अजीबों गरीब अंदाज में महफुज़ है।

एक मिसरी रिसर्च स्कालर इर्शाद खलीफा ने 1976 में कम्प्यूटर की धरती अमेरीका में उसकी खोज करके कुर्आने के इस सिस्टम से दुनिया को जो अवगत किया तो न केवल पुरा संसार चकित रह गया बल्कि उसकी चौखट पर दुनिया श्रद्धा के फुल भी लुटाने लगी।

मेथमेटिक के सारे रूप और अंक एक से 9 में पाये जाते हैं। गणित का सारा सिद्धांत 1 से9 पर आधारित हैं। कुर्आन की शुरुआत

बिसमिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम से होती है। जिसमें 19 शब्द है कुर्आने पाक ने सुरमे मुदस्सिर (सुरए नं. 74) में फरमाया अलैहा तिसअता अशरा

عليها تسعة عشر (المدثر) उन पर उन्नीस है जिसका अर्थ

जहां मुफस्सेरी ने केराम की तफसीरों में बताया गया वहीं कम्प्यूटर के इस युग में भी उस पर विचार किया गया तो इन्सान हैरत में पड़ गया। कम्प्यूटर से पता चला कि कुर्आने अज़ीम में जो शब्द जितनी बार भी आया वो सब 19 का हासिल जर्ब बन जाता है और उसी से बराबर बराबर तकसीम भी हो जाता है। जैसे लफ्जे अल्लाह 2698 बार आया जो उन्नीस 142 बार गुणा करने से यह अंक (फिगर) बन जाता है। इसी तरह अल रहमान शब्द 57 बार आया है जब उन्नीस को तीन बार गुणा किया गया तो सन्तावान बन गया। इसी तरह अलरहीम 114 बार आया है जिसे उन्नीस से 6 बार भाग देने से बराबर तकसीम हो जाता है।

यहां उदाहरण के लिए कुछ ही शब्दों को लिखा गया वर्ना गहराई में जाई तो हैरतो का एक जहां नजर आता है और कम्प्यूटर का नया संसार हमारा स्वागत करता दिखाई देता है। कुर्आन कोई कम्प्यूटर की किताब नहीं है मगर कम्प्यूटर के इस युग में अपने दावे की तस्दीक के लिये अंको का यह इल्म एक नये दौर को जन्म देकर ईमानी दुनिया को आसमानी प्रकाश से जिस तरह जगमगा रहा है उसे देख कर दुनियाए फिकरो फन आज हैरत जदा है और जब इन्सान यह देखता है कि यह बीसवीं सदी की नहीं बल्कि

सदियों पहले सातवीं सताब्दी की पुस्तक है तो वो हैरत नाक तअज्जुब के साथ पुकार उठता है ।

It's Advent changed the course of human History
(Man and His Gods)

इस्लाम ने इन्सानी तारीख का धारा ही मोड़ दिया । समय कम होने के कारण कुछ ही पहलुओं पर मैंने रौशनी डाली है । वर्ना इस्लामी इतिहास का अध्ययन कीजिये तो इस सिलसिले में एक ऐसी दुनिया हमारा स्वागत करती नजर आयेगी । जहां हर हर कदम पर खोज और रिसर्च का एक नया संसार दिखाई देगा । अबु नसर फराबी, अबु मोहम्मद उन्दलुसी, मो. जकरिया अलराजी, इमाम गेजाली (505 हि.) इमाम फखरुद्दीन राज़ी (606 ही.) जैसे अपने अपने दौर के रिसर्च स्कालरों की तहकीक को आज भी इल्मी दुनिया जानती पहचानती है । अबूअली इब्ने सीनाको प्रिंस ऑफ फिजीशियन और इब्ने रूश्य (525हि.) को आज भी अरसतूए सानी के नाम से याद किया जाता है । दूर न जाईये आज के समय के मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी (1856 त. 1921) को देखिये तो उनकी ज़ात खुदा की कुदरत का एक शाहकार दिखाई देगी है । जो एक ही समय में मोहद्दिस और मोफस्सिर के साथ बेहतरीन साईंस दान भी थे । जिनकी मशहूर किताब 'फौजे मूबीन' अल कलेमतुल मुल्हेमा' और अलबयानु श्शाफिया अपने दौर की इतिहासिक किताब है । आपकी साईंसी खिदमात पर श्रद्धा के फुल लुटाते हुए शब्बीर अहमद साहब एम. ए. टिरीपल कलकत्त लिखते है ।

His Contribution to Science are no less important. He refused the theories and Conelusion of Aristotla, neuton and Kapler. He proved with conclusive, evidence, that the earth was stationary and did not revele round the sum. (in the eyes of his critics(बहवाला अफकारे रजा) वैज्ञानिक मान्यता के संदर्भ में उनकी खोज का कोई विकल्प नहीं है। उन्होने कैपलर, न्यूटन और अरस्तू के अथक प्रयास से की गई खोज को कल्पना मात्र बताते हुए सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी स्थायी है। सूरज की परिक्रमा वह नहीं करती बल्कि प्राकृतिक तौर पर प्रत्येक वस्तु अपने-अपने कार्य पर लिप्त है। आप के मशहूर खलीफा मौलाना हामिद अली साहब फ़ारूकी जिन्हें मोहसिने मिल्लत और मध्य भारत के मसीहा के नाम से लोग जानते हैं उन्होने एंग्लो उर्दू हाईस्कूल की स्थापना करते वक्त फरमाया था कि आने वाली सदी साइंस की सदी होगी कुर्आन ने हमें साइंस की एक नई दुनिया दिखाई है। इस्लाम में साइंस की खास अहमियत है और मुझे भी इसके जरिए उसके मेशन को आगे बढ़ाना है।

गर्ज़ कि इस्लाम ने विशाल अंतरिक्ष, अज्ञात ब्राम्हाण्ड पर विचार और चिंतन का 'आकाश गंगा और सितारो पर रिसर्च का, अथाह समुद्र की गहराईयों पर तलाश का जो जज़्बा बेदार किया उसने एक नये इतिहास को जन्म दिया। जहाँ ज्ञान विज्ञान का मधुर प्रकाश रिसर्च और टेक्नोलाजी का विचित्र संसार खोज और तलाश की सुन्दर धरती कदम कदम पर हमारा स्वागत करती दिखाई देती है।

इस जगह में हिंरी परीन (Henri Pirenne) का हवाला दूंगा जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में इस इतिहासिक सत्य को स्वीकार किया है वो कहती हैं इस्लाम ने धरती का चेहरा ही बदल दिया। तारीख का पूरा ढांचा उखाड़ फेंका। आज नये साईंसी इंकेलाब का आगाज़ इस्लाम ने करके एक नये दौर पर जन्म दिया। (इस्लाम दौरे ज़दीद का खालिक साफा -8)

फिल्प हिट्टी हिस्ट्री आफ अरब में लिखते हैं। - उन्होंने इल्म फलक्यिात (Astronomy) में काफी तरक्की की थी उन्होंने जिन सितारों और मजमूअए सय्यारगान (आकाश गंगा) की तहकीक की उनके नाम अर्बी में रखे।

(अल्लाह की अज़मत और कुर्आन का नजरिया इल्म वो साईंस)

आज साईंस की बदौलत योरोप ने बेपनाह तरक्की हासिल कर ली। जिन्दगी के हर शोबे में यह इतनी प्रभावित हो चुकी है कि जो भी इसे ठुकराएगा वो पथ्थरों के युग में पहुंच जाएगा।

आज की दुनियाँ उसकी है साईंस जिसका है मगर आज यही साईंस पूरी दुनिया के लिए मुसीबत और परेशानी का जरिया भी बनतीजा रही है। कहीं कहीं उसके गलत इस्तेमाल ने सारी दुनिया को बारुद के ढेर पर ला खड़ा किया। चूंकी योरोप एक लादीनी स्टेट और मज़हब बेजार मुल्क है जिसकी वजह से साईंस और टेकनालोजी की तरक्की ऐसे हाथों में पहुच गई जिसमें फायदा की बनिस्बत खतरा का इमकान दिन बदिन और बढ़ता जा रहा है। यह ऐसा हीहै जैसे किसी के हाथ में बन्दूक और रिवाल्वर थमा कर उसके दिल से कानून का खौफ और लोगों का इहतेराम निकाल दिया जाए। उसके सामने सिर्फ अपना ही मकसद और अपना ही फायदा हो और अपने मकसद और अपने फायदे की तकमील के लिए उसे हर तरह की आज़ादी भी हो। ऐसे शख्स के हाथों रिवाल्वर कितना खतरनाक होगा और उससे कितनी कीमती जानों के बरबाद होने का हर समय कितना खतरा होगा यह बताने

की जरूरत नहीं।

इसके बरअक्स (विपरीत) जब मजहब इंसान के पूरे शरीर पर छा जाता है तो उसका हर हर कदम कौमों मिल्लात के लिए वक्फ हो जाता है उसे हर वक्त इस बात का एहसास रहता है कि मैं अपने मामलात में कितनी ही चालाकी दिखाऊं मगर मुझ पर कोई है जो मुझे देख रहा है और उसके सामने एक एक दिन का, एक एक लम्हे का मुझे जवाब भी देना है।

हकीकत भी यही है कि हमारी जिन्दगी का एक एक लम्हा रिकार्ड हो रहा है और जब वो हमारे सामने लाया जाएगा तो हर शख्स हैरत से पुकार उठेगा।

مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا

हाय यह कैसी किताब है जिसने हर छोटे बड़े चीज़ को घेर रखा है।
(सूरए कहफ आयत नं.49)

यकीनन जिसे पूछे जाने का खौफ होगा। जिसके दिल में हर समय इसका डर हो कि हर हर लम्हा मेरा वीडियो कैसेट तैयार किया जा रहा है। मेरी हर हर बातों का आडियों कैसेट बन रहा है। जिसके जहन और जिस के फिक्र में यह ख्याल छाया हुआ हो कि एक दिन मुझे अपने हरअच्छे और बुरे काम का जवाब देना है उसके हाथ जब साईंस पहुंचेगी तो बरबादी के बजाए आबादी और तबाही के बजाए जिन्दगी का जरिया बनेगी। उससे नुकसान के बजाए पुरसुकून समाज का निर्माण होगा। मानवता की तड़पती हुई लाश पर अपना सिहांसन बिछाने के बजाए इंसानों की खिदमत और उसके दिलों पर हुकूमत का नजरिया वहां जन्म लेगा। अपना स्वार्थ, मुल्की लूट पाट और डिक्टेटर (Dictator) बनने के बजाए इंसानी खिदमत और मानवता का नव निर्माण उसके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य दिखाई देगा।

इस लिहाज से यह कहना बिल्कुल दुरुस्त और सही है कि साईंस मजहब से जितना दूर होगी उतना ही इंसानियत के लिए खतरात बढ़ते जाएगे

और उससे जितना करीब होगी उतना ही उसके लिए फायदामन्द साबित होगी। उससे करीब होने के बाद अब उसकी तरक्की गुलशने हयात के लिए मौसमे बहार बन जाएगी। उसका आविष्कार उसके लिए नव जीवन संदेश बन जाएगा उसके विकास और उन्नती से मानवता के निर्माण के नये नये मार्ग सामने आएंगे। उसकी बुलन्दी से मनुष्य के घर आंगन में सुकून वो मसर्रत की आकाश गंगा उतरेगी। समाज के हर व्यक्ति के हृदय में खुशियों के कवल खिलेंगे। यही वह आधार है जिसकी बुनियाद पर इस्लाम ने न सिर्फ उसकी अहमियत को दिलों में बसाया बल्कि ऐसे वैज्ञानिकों की हिम्मद अफजाई और हौसला अफजाई करके एक नये युग को जन्म दिया।

अन्त में देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक (GLIMPSES OF THE WORLD HISTORY) पेज नं. 151 के इस पैराग्राफ (PARAGRAPH) पर मैं अपनी बात खत्म करता हूं।

अर्बों से पहले मिश्र, चीन और हिन्दुस्तान में कोई साइन्टीफिक इल्म नहीं था। बिल्कुल मामूली इल्म यूनान में पाया जाता था। रूम में तो बिल्कुल मफकूद (कुछ भी नहीं) था। मगर अर्बों ने साइन्टीफिक उलूम की बुनियाद डाली और वो फादर आफ माडर्न साइन्स (FATHER OF MODERN SCIENCE) कहलाने के मुस्तहिक हो गए।

(बहवाला अल्लाह की अजमत और कुर्आन का नजरिए-ए-इल्म वो साइन्स दफा 57)

मोहसिने मिल्लत एकेडमी की हिन्दी में तारीख साज़ किताबें

1. ज़लज़ला – अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
   – हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
2. पंज सूरए रजविया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
3. तबलीगी जमात – अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
   हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
4. आशिके रसूल – अज प्रोफेसर मसऊद अहमद सा. (पाकिस्तान)
   (इमाम अहमद रज़ा) हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
5. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
6. ताजदारे छत्तीसगढ़ – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
7. कुत्बे राजगांगपुर – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
8. ताजुल औलिया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
9. रायपुर की बहार – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
   (बंजारी वाले बाबा)
10. तजकिर ए बुर्हाने मिल्लत – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
11. इस्लाम और मोआशिरा – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
12. तबलीगी जमात और इस्लाम – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
13. बाबरी मस्जिद – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
    (तारीख के आईने में)
14. बारह महीने की मुकद्दस दुआएं – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
    और तरीकए फातिहा
15. हज की दुआएं – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

एक नज़र इधर भी

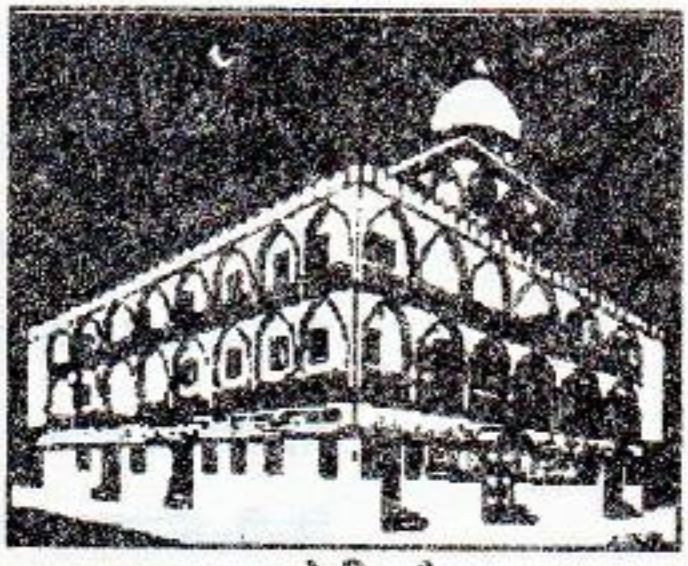

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन बैजनाथपारा, रायपुर

गुले गुलज़ारे फारुकियत मोहसिने मिल्लत हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद हामिद अली साहब फारुकी की चालीस साला खिदमत की मुंह बोलती तस्वीर। जिसने न सिर्फ मध्य भारत के कुफरिस्तान में इश्के रसूल की चांदनी बिखेरी और घरों घर ईल्म की रौशनी फैलाई बल्कि शुद्धि आंदोलन के मौके पर गैर मुस्लिमों को इस्लाम से वाबस्ता करके एक नई तारीख भी जन्म दिया।

ईदुल फित्र और ईदुल अदहा के मौके पर हम अपने इस महबूब और तारीख साज इदारे का तआवुन करके आने वाली नस्लों को इस्लाम से वाबस्ता कर के दुनिया वो आखिरत की कामयाबी हासिल करें।

बानिये दारुल यतामा नाएबे शाहे हुदा ।
आप पे साया फेगन है अशरफो अहमद रज़ा ॥
ता अबद जारी रहेगा फैज़ का दरिया तेरा ।
तिशनगी अपनी बुझाएंगे यहां शाहोगदा ॥